ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 110-111**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

रीति कालीन भक्ति–काव्य

डॉ0 संतोष कुमार पाल

असिटेन्ट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, प्रेमलता महाविद्यालय, अछियां मेंहदावल, संतकबीरनगर (उ0प्र0), भारत

Received-22.01.2026, Revised-29.01.2026, Accepted-05.02.2026 E-mail:dr.santoshpalsingh@gmail.com

सारांशः हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति काल का समय सम्बत् 1700 वि0 से 1900 वि0 (1643–1843 ई0) तक माना जाता है। 200 वर्षों के इतिहास में रीति काल का अपना विशिष्ट स्थान है, जो दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ के वैभव काल से प्रारम्भ होकर औरंगजेब के संघर्षमय युग को लांघती हुयी मुगल साम्राज्य के पतन तक जाती है। रीति काल में जितने कवि हुये शायद ही किसी काल में दिखाई पड़ें। इस काल में जहाँ सामन्तों राजाओं का जीवन विलासिता से परिपूर्ण होने के कारण सामन्ती राजाओं की छत्रछाया में उनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य होता रहता था, वहीं कविता में श्रृंगारिका की ही प्रधानता रहती थी। लेकिन इसके साथ–साथ वीर काव्य, नीति काव्य एवं भक्ति की रचना भी पर्याप्त मात्रा में मिलती है। भक्ति काल में भक्त कवियों ने भक्ति की जो मंदाकिनी बहाई वह अत्यधिक शक्तिशाली और व्यापक प्रभाव वाले सिद्ध हुए, और उसका प्रभाव रीति काल में भी भक्ति काव्य के समान्तर धाराएँ चलती है। लेकिन रीति काल में भक्ति मुख्य विषय के रूप में न होकर गौड़ विषय के रूप में प्रतिपादित होती है।

कुंजीभूत शब्द– रीति कालीन भक्ति–काव्य, विशिष्ट स्थान, संघर्षमय युग, मुगल साम्राज्य, पतन, जीवन विलासिता, छत्रछाया, प्रतिपाद्य।

डॉ0 नागेन्द्र ने कहाँ है किः '' रीति काल का कोई भी कवि भक्ति–भावना से हीन नहीं हो सकता था क्योंकि भक्ति उसके लिए मनोवैज्ञानिक आवश्यकता थी। भौतिक रस की उपासना करते हुए उसके विलास जर्जर मन में इतना नैतिक बल नहीं था कि भक्ति रस में अनास्था प्रकट कर सकें। अथवा सैद्धान्तिक निषेध कर सके।''

इससे यह प्रतीत होता है कि भक्ति की धर्म की रसात्मक अनुभूति को व्यक्त करने के लिए बहुत बार राधा–कृष्ण के विविध प्रतीकों का सहारा लिया गयाः

आगे सुकवि रिझिहै तो कविताई न तो।
राधिका कन्हाई सुमरन को बहानौ है।। **–भिखारी दास**

एक ओर रीति कालीन कवियों ने श्रृंगारिकता का वर्णन किया वहीं दूसरी ओर भक्ति–भावना से ओत–प्रोत काव्य का खूब सृजन किया, जिससे रीति काल के काव्यों में भक्ति–भावना प्रबल हो जाती है। रीति काल के अन्तर्गत भक्ति कवियों के धार्मिक विश्वास और प्रेम के स्वरूप को समझने के लिए इस काल के सीमा के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख कविः

संत काव्य धारा के अंतर्गत– पारी साहब, दरिया साहब, जगजीवन दास, पलटू दास, चरन दास, तुलसी दास, शिवनारायण दास, तुलसी साहब, बूला साहब, सहजोबाई, दयाबाई इत्यादि।

राम भक्ति काव्य धारा के अंतर्गत– जानकी, रासिक शरण, भगवन्त राय, खीची, जनक राजकिशोरी शरण इत्यादि है।

कृष्ण भक्ति काव्य धारा के अंतर्गत– रूप रासिक देव, नागरी दास, अलवेलि अली, चाचा हित वृन्दावन दास, भागवत रासिक इत्यादि है।

इससे यह प्रतीत हो रहा है, भक्ति काव्य के समय भक्ति मुख्य काव्य धारा में परिणित होता है। लेकिन रीति काल में भक्ति गौण धारा के रूप में प्रवाहित होती रही है। संत काव्य, सूफी काव्य, राम काव्य, कृष्ण काव्य के रूप में पर्याप्त मात्रा में रचनाएँ हुई है।

संत काव्य धारा के अंतर्गत पारी साहब–संत काव्य धारा के अंतर्गत पारी साहब ईश्वर को जीवात्मा को स्त्री के रूप में और परमात्मा को प्रियतम के रूप में सम्बोधित करते हुए पद लिखें है, जिसका उदाहरण द्रष्टव्य हैः

विरहिनी मन्दिर दिपना वार।
विन वाती विन तेल जुगति सो,
विन दीपक उजियार।
प्रान प्रिया मेरे घर आयों,
रचि पचि सेज संवार।
सुखमन सेज परम तत रहिया,
पिय निरगुन निरंकार।
गावहु री मिलि आनंद मंगल
पारी मिल कर पार।।

इसी तरह सूफी काव्य धारा के अंतर्गत दुखहरन दास जी ने (पुदुपावती) काव्य की कथा में अनेक कठिनाइयां झेलता हुआ पुदुपावती के साथ विवाह का संयोग प्राप्त करता है। इस प्रकार यह काव्य मानव को संसारिकता की निद्रा से जगाकर ज्ञान भय ईश्वरीय प्रेम का संदेश प्राप्त करता है, जिसका उदाहरणः

जागहि खेलत जुआ जुवारी, जागहि रासिक पुरूष और नारी।
जागे कारन मै चित जानी, हिअ उपजाई प्रेम कहानी।

और राम काव्य धारा के भक्त कवियों ने भक्ति–भावना में राम को ब्रह्म माना और उनके प्रति अपनी भावनाओं की पुष्पांजलि श्रद्धा और प्रेम के साथ समर्पित की है। जानकी रासिक शरण जी 'अवधसागर' नामक काव्य में केसरिया बाने मै राम का सावला शरीर रथ मै कैसी शोभा पा रहा है।

इसका उदाहरण इस प्रकार हैः

रथ पर राजत रघुवर राम
क्रीट मुकुट सिर धनुवान कर सोभा को हिन काम।
स्याम गात के सरिया बानों सिर पर मौर ललाम
बैजन्ती बनमाल लसै उर फटिक मध्य अभिराम

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

मुख्य मयंक सर सीरूह लोचन है सबके मुख्य धाम
कुटिल अलक अतस मै भनी दुहुं दिस कुटि स्याम
कम्बु कंठ मोहित की माला किकिन कटि दुति दाम।
रस माला यह रूप रासि कवर करहु छिपे अभिराम।

कृष्ण भक्ति काव्य में माधुर्य भाव की भक्ति का ही प्रधान पाया जाता है। प्रेम भावना पूर्ण भक्ति की जो धारा बहती चली आ रही थी वह कृष्ण और राधा के नामों की आड़ में मानवी श्रृंगार के रूप में परिवर्तित होकर प्रवाहित होती रही है।

ब्रजवासीदास जी का उदाहरण द्रष्टव्य हैः

भृकुटि वंकनैन खंजन से, कंजन गंजन वारे।
मदभंजन खग मीन सदा जे, मन रंजन अनियारे।।

इससे यह मालूम होता है कि कृष्ण भक्ति के उद्गार कवियों की वाणी के माध्यम से होते रहे है।

निष्कर्ष– रीति काल के कवियों में भक्ति का जो रूप दिखाई पड़ता है उसमें कहीं–कहीं भावात्मक विहलता दिखाई पड़ती है। श्रृंगारी कवि होने के कारण भक्ति की स्थायी पद्धति इनके हृदय में स्थापित नहीं हो सकी है।

भक्ति परक रचनाओं का सृजन इस कारण से हुआ कि रीति काल के पूर्व भक्ति का जो स्फीति और अखण्ड काव्य प्रवाह दिखाई पड़ती है उसके सर्वथा प्रतिकूल जाने का साहस किसी रीति कवि का न हुआ क्योंकि अपने जीवन के प्रति अतिशय रासिकता और श्रृंगारिकता से उबकर मन की शांति के लिए उन्होंने भक्ति परक रचनाएँ की इस काल में भक्ति कवि संसार के प्रति विराग और भगवान के प्रति राग की भावना से अनुप्रमाणित होने के कारण अपनी अभिव्यक्तियों के प्रति पूरे इमानदार थे। जिसके कारण रीति काव्यों की प्रणाली प्रतीक योजना ग्रहण करते हुए भी इन भक्त कवियों का दृष्टिकोण इनकी रचनाओं में इस प्रकार व्यक्त हुआ कि इनके भक्त होने में किसी प्रकार की शंका नहीं उठाई जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास– डॉ0 नागेन्द्र (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)।
2. रीति कालीन कविता में भक्ति तत्व– डॉ0 उषा पुरी।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
4. हिन्दी साहित्य संवेदना का इतिहास– डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदीं।
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– बच्चन सिंह।
6. रीति काव्य की भूमिका– डॉ0 नागेन्द्र।
7. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास– विश्वनाथ त्रिपाठी।
8. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास– हजारी प्रसाद द्विवेदी।
9. रीति कालीन कवियों की प्रेम व्यंजना– हरिवंश राय बच्चन।

*****